

प्रथम दिवस आवरण First Day Cover

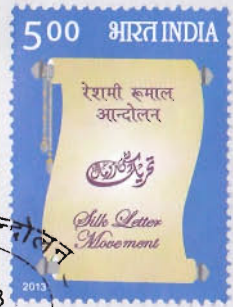
ريشامی رومال آندولن

रेशमी रूमाल आन्दोलन

Silk Letter Movement

रेशमी रूमाल आन्दोलन

Silk Letter Movement



ई दिल्ली 110001 NEW DELHI

Silk Letter Movement

The freedom movement in India saw various national and regional campaigns, agitations and efforts, which played an important role in connecting the masses to the ultimate objective of ending the British rule.

The Silk Letter Movement (Reshmi Rumal Tehrik) was one such effort from a group of revolutionaries, many of whom were connected with the Darul Uloom at Deoband. The said movement was a plan to mobilize the support of the governments of Afghanistan and Turkey to invade India and to simultaneously organize a revolt within India to overthrow the British rule. Obaidullah Sindhi and Maulana Mahmood Hasan were two important leaders of this movement. In August 1916, some letters written on silk fell into British hands. Hence the term 'Silk Letters Movement'. The letters were sent by Obaidullah Sindhi from Kabul and were to be delivered to Maulana Mahmood Hasan who was then in Mecca. The first official British document which dealt with this movement as also other major Indian revolutionary groups and revolutionary activities and 'conspiracies' in different parts of the country was Sedition Committee Report (1918). Chapter IV of this Report mentions 'The "Silk Letter" conspirators'.

In 1915, Obaidullah Sindhi shifted his activities to Afghanistan while Maulana went to Hijaz.

Obaidullah Sindhi established contact with the Ghadar Party leaders and when the Provisional Government of Azad Hind was proclaimed in Kabul, he became its Home Minister. Turkish Governor of Hijaz issued a declaration exhorting Muslims to wage 'jihad' against the British. The Silk Letters that fell into British hands contained details of the Provisional Government of Azad Hind and its plans and a comprehensive scheme of forming an army and getting the support of the Turkish Government. The seizure of these letters by the British and the repressive measures that the British Government took as a follow-up resulted in a serious setback to the Movement. The government of Afghanistan also became hostile to the Indian revolutionaries in Afghanistan. In the meantime, Hijaz came under British control and Maulana Mahmood Hasan alongwith Husain Ahmad Madani and other associates were arrested and sent to Malta from where they were sent back to India in 1920.

Department of Posts is happy to commemorate the contribution of 'Silk Letter Movement' to India's freedom movement by issuing a Commemorative Postage Stamp.

Credits:-

Text : Based on the material provided by Indian Council of Historical Research.

Stamp/FDC/
Cancellation : Alka Sharma.

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



रेशमी रूमाल आन्दोलन
Silk Letter Movement

विवरणिका BROCHURE

रेशमी रूमाल आंदोलन

भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के अंतर्गत विभिन्न राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय आंदोलनों और उग्र प्रदर्शनों आदि का आयोजन किया गया, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत को समाप्त करने के अंतिम उद्देश्य से जनसाधारण को जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

रेशमी रूमाल आंदोलन, क्रांतिकारियों के एक समूह का ऐसा ही प्रयास था। इनमें से अधिकतर क्रांतिकारी देवबंद के दारुल उलूम से संबंधित थे। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए भारत पर हमला करने के लिए अफगानिस्तान और तुर्की की सरकारों का समर्थन हासिल करना और साथ ही भारत में विद्रोह खड़ा करना था। ओबैदुल्लाह सिंधी और मौलाना महमूद हसन इस आंदोलन के दो महत्वपूर्ण नेता थे। अगस्त 1916 में रेशम पर लिखे कुछ पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गए। इसी कारण इस आंदोलन का नाम 'रेशमी रूमाल आंदोलन' पड़ा। ये पत्र ओबैदुल्लाह सिंधी ने काबुल से भेजे थे और इन्हें मौलाना महमूद हसन के सुपुर्द किया जाना था, जो उस समय मक्का में थे। सेडिशन कमेटी रिपोर्ट (राजद्रोह समिति रिपोर्ट) (1918) वह पहला आधिकारिक ब्रिटिश दस्तावेज था, जिसमें इस आंदोलन के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों के अन्य क्रांतिकारी समूहों और क्रांतिकारियों के कार्यकलापों और 'षडयंत्रों' का विवरण प्रदान किया गया। इस रिपोर्ट के अध्याय IV में 'रेशमी रूमाल षडयंत्रकारियों' का उल्लेख किया गया है।

1915 में ओबैदुल्लाह सिंधी अफगानिस्तान चले गए जबकि मौलाना हिजाज को प्रस्थान कर गए। ओबैदुल्लाह सिंधी ने गदर पार्टी के नेताओं से संपर्क स्थापित किया और काबुल में

आजाद हिन्द की अंतरिम सरकार की उद्घोषणा होने के उपरांत वे उसके गृह मंत्री बन गए। हिजाज के तुर्क गवर्नर ने ऐलान जारी कर मुस्लिमों को ब्रिटिश के खिलाफ 'जिहाद' करने को कहा। रेशम पर लिखे जो पत्र अंग्रेजों के हाथ लगे उनमें आजाद हिन्द की अंतरिम सरकार का ब्यौरा और एक फौज खड़ी करने तथा तुर्की की सरकार का समर्थन हासिल करने की व्यापक योजना का विवरण था। अंग्रेजों द्वारा इन पत्रों की जब्ती और इसके बाद ब्रिटिश हुकूमत द्वारा उठाए गए दमनकारी कदमों से इस आंदोलन को तगड़ा झटका लगा। अफगानिस्तान सरकार भी अफगानिस्तान में भारतीय क्रांतिकारियों के प्रति उग्र हो गई। इस बीच हिजाज, ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया और मौलाना महमूद हसन के साथ हुसैन अहमद मदनी और उनके अन्य सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया और माल्टा भेज दिया गया जहां से उनको 1920 में भारत वापस भेज दिया गया।

डाक विभाग, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में 'रेशमी रूमाल आंदोलन' के योगदान के महत्व के रेखांकन स्वरूप एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ : भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान की गई सामग्री पर आधारित।

डाक-टिकट /
प्रथम दिवस आवरण
विरूपण :

अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 11 जनवरी, 2013
Date of Issue : 11 January, 2013

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 4.1 लाख*
Stamps Printed : 0.41 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : भारत प्रतिभूति मुद्रणालय,
नाशिक
Printer : India Security Press,
Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* 1 लाख प्रस्तावक हेतु।

*0.1 million for the proponent